भगवान गौतम बुद्ध एवं भारतीय समाजः (बौद्ध धर्म के उदय से 12वीं शताब्दी तक)
ISBN: 978-93-93166-10-4

बीकानेर संभाग के तीर्थ स्थल

डॉ. अमित मेहता
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय,
सीकर, राजस्थान, भारत

सारांश

राजंस्थान राज्य वर्तमान में सात संभागों जयपुर, जोधपुर, अजमेर, कोटा, उदयपुर, बीकानेर तथा भरतपुर में विभक्त है। बीकानेर संभाग के अंतर्गत बीकानेर, श्री गंगानगर, हनुमानगढ़ तथा चुरू चार जिलें आते है। इस संभाग का क्षेत्रफल 64,708 वर्ग कि.मी. है। यहॉ अनेक तीर्थ स्थल धर्मिक आस्था व सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में स्थित है।

तीर्थ स्थल धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व वाले स्थान को कहते है। तीर्थ संस्कृत भाषा का एक शब्द है जो तीर (किनारा) और अथ (स्थान) से बना है जिसका अर्थ किसी नदी या पवित्र सरोवर पर स्थित होना है। अन्य शब्दों में तीर्थ वह है जो पवित्र, हृदय को सुकुन, मन को शांति, पुण्य, मोक्ष और बुद्धि को स्थिरता प्रदान करें। बीकानेर संभाग में स्थित प्रमुख तीर्थ स्थल इस प्रकार है।

करणी माता का मन्दिर

बीकानेर से लगभग 25 किलोमीटर दूर दक्षिण में स्थित देशनोक नामक स्थान पर यहाँ के शासकों की कुल देवी करणी माताजी का मन्दिर निर्मित है। ऐसी मान्यता है कि इनके कृपा से ही राठाड़ों का अधिकार इस क्षेत्र पर हुआ था। किसी भी यात्रा या अभियान पर निकलने से पूर्व बीकानेर

ISBN: 978-93-93166-10-4

नरेश यहां आकर करणी माता का आर्शीवाद प्राप्त करते थे। करणी माता चारण जाति की स्त्री थी जो अपनी तपस्या के बल पर स्वयं देवी बन गयी। करणी माता के पिता का नाम मेहा था, इनकी पत्नी देवल के गर्भ से वि. संवत 1444 के अश्विन मास की सप्तमी को करणी का जन्म हुआ। उनके जन्म का नाम श्रृदिबाई था । इनका करणी नाम उनकी बुआ ने उनके अद्भूत बाल चरित्र को देखकर रखा। इनका विवाह ग्राम साठीका में रोहड़िया शाखा के चारण केलू बिठू के पुत्र देपा के साथ वि. संवत 1473 में 29 वर्ष की आयु में हुआ था। इस मन्दिर के पुजारी भी चारण हैं। इस मन्दिर में सफेद चुहे भी है जो करणी माता के 'काबे' कहलाते है। कहा जाता है कि मंदिर में इन्हें देखकर भक्त जो भी मन्नौती मांगता है, वह अवश्य ही पूर्ण होती है । यहाँ पर चूहो को पकड़ने की मनाही है। किसी श्रृद्धालु के पैर से कुचलकर कोई चूहा मर जायें तो उसे प्रायश्चित स्वरूप मन्दिर में सोने का चूहा चढ़ाना पड़ता है।

वि. सं. 1493 में करणी ने अपने हाथों से विशाल प्रस्तर खण्डों को एक के ऊपर एक रखकर बिना चुना और गारे के एक गोलाकर गुम्बारें का निर्माण किया। इसके मध्य में कोरणी की हुई पीले पत्थर पर करणीमाता की आकर्षक खड़ी मूर्ति स्थापित है। माता के सिर पर मुकुट और बायें हाथ में त्रिशूल हैं। जिसकी नोक में महिषा का सिर पिरोया हुआ है। दूसरे हाथ में नरमुण्ड लटका हुआ है। यह प्रतिमा वि. सं. 1595 की चैत्र शुक्ल 14 को अधिष्ठित की गयी थी। इस प्रतिमा की पीठ पर सोने का तोरण बना हुआ है तथा सिर पर सोने का छत्र निर्मित है। गुम्बारें की दीवार पर सोने के किवाड़ लगे है। गुम्बारें के उपर कच्ची इटों के मन्दिर का निर्माण बीकानेर के राव जेतसी नें हूमांयु के भाई कामरान पर भटनेर के युद्ध में विजय के उपलक्ष्य में करवाया था। इस मन्दिर के परकोर्टे तथा मुख्य प्रवेश द्धार का निर्माण महाराजा सूरज सिंह जी ने करवाया । महाराजा गंगा सिंह जी ने प्रवेश द्धार पर

ISBN: 978-93-93166-10-4

संगमरमर जड़वाया । इस पर हंस पर सवार सरस्वती, विश्राम मुद्रा में सिंह की आकृतियां, मस्त हाथी, योग मुद्रा में लीन साधु, प्रोल के किनारे पर चूहों की आकृतियां उकेरी हुई हैं।

मुख्य प्रवेश द्वार के अन्दर दायीं ओर चूहों के आवास और सुरक्षा के लिए जाल निर्मित है जिनके अन्दर काबा स्वतन्त्र विचरण करते है। इनको दूध पिलाने और मिठाई व अनाज खिलाने के लिए बर्तन स्थान-स्थान पर रखे हुए हैं। करणी माता को नियमित लापसी को भोग लगाया जाता है।

शिवबाड़ी

यह स्थान बीकानेर से लगभग 4 किमी दूर पूर्व में स्थित है। यह चारों ओर से सुदृढ़ दीवारों से घिरा हुआ है। इसके चारो कोनो पर चार बुर्ज हैं। मुख्य द्वार पूर्वाभिमुखी है तथा इस पर सुन्दर कमरे बने हुए हैं। मुख्य द्वार के अन्दर बिल्कुल सामने लम्बे-चौड़े ऊंचे चौक पर लाल पत्थर के बरामदे के बीचों-बीच सफेद संगमरमर का मुख्य मंदिर है। यह श्री लालेश्वर ज्योतिर्लिंग महादेव का मंदिर है जिसमें काले पत्थर की पंचमुखी प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यह मंदिर वि.सं. 1933 में महाराजा डूंगरसिंहजी ने अपने पिता महाराज लालसिंह जी की स्मृति में बनवाया था। मुख्य मंदिर के द्वार के पास की दीवार पर एक शिलालेख उत्कीर्ण है जिस पर बीकानेर नरेशों महाराज गजसिंह से महाराजा डूंगरसिंह तक की वंशावली दी हुई है। बरामदे का फर्श संगमरमर के श्वेत और काले चौकों से मिलकर बना हुआ है। मंदिर में सामने बरामदे में पश्चिमाभिमुखी बैठा हुआ पीतल का नंदी है जो लगभग 5 फुट लम्बा व 3 फुट ऊंचा है। जिसके नेत्र चांदी के बने प्रतीत होते हैं। मुख्य मंदिर के दरवाजे भी चांदी के बने हुए हैं। बरामदे की छत पर सुन्दर एवं आकर्षक चित्र बने हुए हैं।

इसी चौभीते में एक अन्य शिव मंदिर महाराजा डूंगरसिंह जी का

ISBN: 978-93-93166-10-4

बनवाया हुआ है जो डूंगरेश्वर महादेव के नाम से प्रसिद्ध है। श्रावण मास में सोमवार को विशेष तथा वर्ष के अन्य सोमवार को यहां श्रृद्धालुओं की भीड़ रहती हैं।

कोलायत

बीकानेर से 50 कि.मी. दूर दक्षिण-पश्चिम में स्थित कोलायत एक प्राचीन तीर्थ स्थल है। जनश्रुति के अनुसार इस स्थल पर बह्मा के पौत्र व कर्दम ऋषि के पुत्र महर्षि कपिल ने सांख्य दर्शन का प्रतिपादन किया था। यहॉ एक विशाल जलाशय है जिसके किनारे कपिलमुनि का एक मन्दिर है। ऐसा कहा जाता है कि यहॉ कपिलमुनि का आश्रम था जहॉ उन्होने तपस्या की तथा अपनी माता को ज्ञान दिया था। यह मन्दिर 700 वर्ष पुराना है। महर्षि कपिल मन्दिर के सामने उनकी माता देवहुति का मन्दिर बना हुआ है। बीकानेर के स्वर्गीय महाराज गंगासिंह जी ने मन्दिर में संगमरमर लगवाकर आकर्षक स्वरूप प्रदान किया था। इसके अतिरिक्त उन्होने कोलायत जलाशय के चारों ओर पक्के घाटों का निर्माण करवाया तथा शिव, गणेश, गंगाजी, सूर्य आदि मन्दिरों का निर्माण भी करवाया । प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को यहॉ मेला लगता है। जिसमें देश के कोने-कोने से हजारों श्रद्धालु कपिल सरोवर में स्नान करने तथा कपिलमुनि के दर्शन करने आते है।

कोड़मदेसर

बीकानेर से 24 कि.मी. दूर पश्चिम में कोड़मदेसर एक प्राचीन तीर्थ स्थल है। यहॉ संगमरमर से निर्मित प्राचीन भैरव मन्दिर है। यह मन्दिर खुले आसमान के नीचे है। बहुत से भक्तों ने मन्दिर का भव्य निर्माण करवाने की कोशिश की, परन्तु यह कभी संभव नहीं हो पाया। बीकानेर नगर की स्थापना से पूर्व राव बीकाजी इसी स्थान पर करीब 3 वर्ष तक रहे। यहीं बीकाजी ने अपने इष्टदेव की मुर्ति प्रतिष्ठित की थी। मन्दिर के पीछे माता

ISBN: 978-93-93166-10-4

कोड़मदेवी द्वारा निर्मित एक तालाब है इस कारण इस गांव का नाम कोड़मदेसर पड़ा। यहॉ दो सती स्मारक भी है। यहॉ प्रतिवर्ष भाद्रपद मास की तेरस को मेला भरता है। जिसमें सभी जाति वर्ग के हजारों भक्त श्रद्धा से भाग लेते है।

मुकाम-

यह तीर्थ स्थल बीकानेर से 63 कि.मी. दूर नोखा तहसील के मुकाम गांव में स्थित है। यह बिश्नोई सम्प्रदाय का एक प्रमुख तथा पवित्र स्थल है। श्री जम्भेश्वर जी (जाम्भोजी) का जन्म सं. 1508 में पीपासर (नागौर) में हुआ, जो बिश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। जाम्भोजी की वि.सं. 1593 (1536 ई.) मार्गशीष बदी 9 को मृत्यु के बाद उन्हें तालवा गांव में एकादशी के दिन समाधि दी गई। उनके पवित्र शरीर का अन्तिम पड़ाव होने से तालवा गांव मुकाम के नाम से विख्यात हुआ। यहॉ पर मन्दिर जांभोजी के प्रिय शिष्य रणधीर जी बाबल ने 1540 ई. में बनवाया था। यहॉ फाल्गुन अमावस्या तथा आसोज अमावस्या में दो मेले भरते है। फाल्गुन अमावस्या मेला प्रारम्भ से ही चलता आ रहा है, परन्तु आसोज अमावस्या का मेला संत वील्होजी ने 1591 ई. में प्रारम्भ किया। यहॉ बिश्नोई समाज के लाखों "जातरी" (यात्री) धोक देने आते है।

गोगामैड़ी

यह हनुमानगढ़ जिले के नोहर तहसील में एक गांव है। गोगाजी के तीर्थ स्थलों में गोगामैड़ी व ददरेवा की मैड़ी प्रमुख है। ऐसी मान्यता है कि गोगाजी का शीश युद्ध करते समय कट कर ददरेवा में गिरा था, वे बिना शीश के धड़ से शत्रुओं के साथ लड़ते रहे और अन्त में उनका धड़ गोगामैड़ी नामक स्थान पर गिरा गया, वहीं उनकी समाधि तथा उसपर मन्दिर निर्मित किया गया। इसकी बनावट मकबरे के आकार की है, जिसके चारों कोणों पर

ISBN: 978-93-93166-10-4

ऊँची दीवारें है। मन्दिर के दरवाजे की ऊँचाई पर "बिस्मिल्ला" अंकित पत्थर लगा हुआ है। गोगामैड़ी का मुख्य द्वार पूर्वाभिमुखी है। मुख्य द्वार से सीढ़ियां चढ़ने पर विशाल प्रांगण आता है जिसके मध्य में चबूतरे पर चौकोर कमरेनुमा संगमरमर से निर्मित समाधि स्थल है । इसके सामने गोगाजी की उत्कीर्ण देवली है जिस पर गोगाजी घोड़े पर सवार दिखाये गये है। मैड़ी के मन्दिर के बाहर दक्षिण की ओर चौकी पर नारसिंह कुण्ड़ है। इसका अधिष्ठाता व पूजारी ब्राह्मण होता है। यहाँ भाद्रपद मास में कृष्णपक्ष व शुक्लपक्ष में दो मेले भरते है। इनमें दूर-दूर से हजारों श्रद्धालु आते है। मेले का झण्ड़ारोहण भाद्रपद लगते ही कर दिया जाता है। श्रद्धालुओं का आवागमन सप्तमी से शुरू हो जाता है। अष्टमी की रात्री को भक्तों का ठहराव गोरख टिलें पर रहता है। नवमीं की प्रातः सारा मेला गोगामैड़ी की ओर चल पड़ता है। जो भक्तगण 'निशान' व 'अखाड़ा' ले कर आते है वे गोगाजी की समाधि के सामने तरतंब से खड़े होकर ढ़ोल, झांझ बजाते है फिर मैड़ी की परिक्रमा करते है। ये अखाड़ वाले जब तक गोगामैड़ी में रहते है, तब तक ऐसा दिन में तीन बार करते है। गोगाजी की समाधि की आरती सुबह-शाम घृत ज्योति, नगाड़ा, घड़ियाल एवं शंख ध्वनी के साथ होती है। नवमीं की रात्री को गोगाजी का जागरण किया जाता है। तदुपरान्त मेला विसर्जित हो जाता है।

धुना श्री गोरखनाथ जी का मन्दिर

यह तीर्थ स्थल गोगामैड़ी से 2 कि.मी. दूर गोगाणा में स्थित है। इस तीर्थ स्थल में मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य गोरख नाथ जी की धुनी (चिमनी) स्थित है। इसके अलावा यहाँ पर देवी भद्रकाली, श्री भैरूजी तथा शिव परिवार की मुर्तियां भी है। यहाँ हजारों श्रद्धालु दर्शनार्थ आते है।

सिल्ला माता मन्दिर

यह हनुमानगढ़ में लुप्त सरस्वती नदी के प्राचीन बहाव क्षेत्र पर

ISBN: 978-93-93166-10-4

स्थित है। ऐसी लोक मान्यता है कि मन्दिर में स्थापित माता जी का सिल्ल पत्थर घग्घर नदी में बहकर आया था। इस मन्दिर का निर्माण 18वीं शताब्दी में होना बताया जाता है। लोगों में विश्वास है कि माता के सिल्ल पीर पर जल व दुध चढ़ाने वाले के त्वचा सम्बन्धि सभी रोगों दूर हो जाते है। प्रत्येक गुरूवार को यहां मेला भरता है। इसमें हजारों श्रद्धालु माता के दर्शनार्थ आते है।

भद्रकाली मन्दिर

यह तीर्थ स्थल हनुमानगढ़ शहर से लगभग 7 कि.मी. दूर घग्घर नदी के तट पर स्थित है। यहॉ माँ दुर्गा के कई अवतारों में से एक अवतार भद्रकाली माता का मन्दिर है। इस मन्दिर का निर्माण बीकानेर के महाराजा रामसिंह ने करवाया था। कालान्तर में बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने इसे आधुनिक स्वरूप प्रदान करवाया । इस मन्दिर में लगभग ढ़ाई फीट ऊँची लाल पत्थर से निर्मित माता की मुर्ति प्रतिष्ठित है। यहॉ प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल अष्टमी व नवमीं को मेला भरता है। नवरात्रों में हजारों श्रद्धालु माता के दर्शन के लिए आते है।

ददरेवा

वीर चैहान राजपूत गोगाजी महाराज का जन्म चुरू जिले के ददरेवा नामक स्थान पर हुआ था इसलिए यह स्थान लोकतीर्थ के रूप में पूज्य है। राजस्थान के पांच प्रमुख लोकदेवताओं में से एक प्रमुख लोकदेवता गोगाजी है। इनके अन्य नाम 'जाहरपीर' तथा 'गोगापीर' भी है। हिन्दुओं के साथ-साथ कुछ मुसलमान वर्ग भी इनकों पूजते है। गोगाजी के पिता चौहानवंशी नरेश जेवर और माता बाछल दे थी। इनका समय विक्रम की 11वीं शताब्दी माना जाता है। ये विदेशी आक्रमणकारी महमूद गजनवी के समकालीन थे। गोगाजी की मुर्ति सदैव घोड़े पर सवार उत्कीर्ण होती है। यह सांपों के देवता माने जाते है। ऐसा माना जाता है कि गोगाजी की पूजा करने

ISBN: 978-93-93166-10-4

से सांप का जहर उतर जाता है। ददरेवा में गोगाजी का एक प्राचीन मन्दिर निर्मित है। वर्तमान में इसे आधुनिक स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। मन्दिर का शिखर ऊँचा है। यहॉ पर एक प्राचीन व पूजनीय तालाब भी है।

मन्दिर तथा उसके आस-पास के स्थानों पर भाद्रपद वदि 9 व भाद्रपद सुदि 9 को गोगाजी की स्मृति में मेले भरते है। गोगा नवमीं को हजारों की संख्या में गोगाजी के भक्त ऊँचे-ऊँचे निशानों को बड़े उत्साहपूर्वक गाते-बजाते गोगामैड़ी तक ले जाते है। निशान के आगे जंगी, ढोल, डेरू और झांझ बजाते है, और सांपों को हाथो में लिए रहते है। ये लोग लोहे की सांखलों के गुच्छों को अपने हाथों में उठाकर अपने पीठ व सिर पर प्रहार करते हुए एक विशेष प्रकार का नृत्य करते है। यह नृत्य गोगामैड़ी के सम्मुख चरम पर होता है। नृत्य के बाद निशानों को गोगाजी की प्रतिमा के सम्मुख झुकाकर गोगाजी की जय जयकार की जाती है। तत्पश्चात् लोग उसी प्रकार गाते-बजाते लौट जाते है। भाद्रपद मेले के अतिरिक्त पूर्णिमा का मेला भी यहॉ लगता है जो ददरेवा से प्रारम्भ होकर गोगामैड़ी में समाप्त होता है।

सालासर हनुमान जी

यह तीर्थ चुरू जिले के सुजानगढ़ तहसील में स्थित है। यहॉ पर हनुमान जी का प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर से सम्बन्धित एक कथा प्रचलित है- मोहनदासजी रूपायणी जो सालासर गांव से 16 मील दूर है, के रहने वाले थे। वे अपनी विधवा बहन व भांजे के साथ बहन के ससुराल सालासर में आकर रहने लगे। मोहनदासजी शुरू से ही विरक्त वृति वाले मनुष्य थे और हनुमान जी को अपना इष्ट मान कर उनकी पूजा करते थे। कहा जाता है कि आसौटा गाँव के जाट किसान को एक मुर्ति 1754 में खेत जुताई के दोरान जमीन से बाहर निकली मिली। जिसे वहॉ के ठाकुर ने सालसर भिजवाई, उधर मोहनदास जी स्वप्न में हनुमान जी द्वारा बताये अनुसार यह मुर्ति लेने चल पडे।

ISBN: 978-93-93166-10-4

पाबोलाब तालाब के पास ठाकुर के आदमी ने मुर्ति मोहनदास जी को दी और उन्होने सालसर लाकर इस मुर्ति की स्थापना वि.स. 1811 में श्रावण सुदि 10, रविवार को कर दी। इस मन्दिर का निर्माण सं. 1815 में हुआ। यह मन्दिर शिखरयुक्त है। इसके गर्भगृह में हनुमान जी की मूछों वाली प्रतिमा स्थापित है। मन्दिर का प्रदक्षिणा पथ चांदी की मुर्तियों से सुसज्जित है।

यहॉ प्रतिवर्ष चैत्र व कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है। प्रति मंगलवार व शनिवार को हजारों की संख्या में श्रद्धालु बालाजी के दर्शनार्थ आते है। यहॉ नवविवाहित जोडें जात देने आते है तथा नवजात शिशुओं का चुड़ाकरण संस्कार भी किया जाता है। इन अवसरों पर दाल-बाटी-चूरमा व सवामणी करने वाला की भीड़ लगी रहती हैं। सालासर के पूर्व में एक कि.मी. दूर श्री हनुमान जी की माता अंजना देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है। जो भक्त सालासर बालाजी के दर्शनार्थ आते है वे इस मन्दिर में अवश्य आते है।

अन्य तीर्थ स्थल

इस संभाग के चुरू जिले में द्रोणपुर, तोलीयासर, मलासी भी तीर्थ स्थल है।

तोलीयासर

सरदारशहर मार्ग पर एक तीर्थ स्थल है। यहॉ पर प्रसिद्ध भव्य भैरव मन्दिर है। यह मन्दिर सफेद संगमरमर से विशाल बना हुआ है। यहॉ बच्चों का मुण्डन करने, जात देने की प्रथा है। यहॉ प्रतिवर्ष अश्विन मास में मेला लगता है जिसमें हजारों की संख्या में लोग आकर मन्नोती मांगते है।

मलासी

सुजानगढ़ तहसील में एक गांव है जहॉ रिगटाल भैरव मन्दिर है। यहॉ भी प्रतिवर्ष अश्विन मास में मेला लगता है। शुक्लपक्ष के प्रत्येक रविवार को सैंकड़ों लोग यहॉ अपने बच्चों के बाल चढ़ाने आते है।

ISBN: 978-93-93166-10-4

द्रोणपुर

सुजानगढ़ से 9 कि.मी. दूर गोपालपुरा स्थित है। महाभारत काल में गोपालपुरा द्रोणपुर के नाम से जाना जाता था। प्रचलित लोक कथाओं के अनुसार इस स्थान को गुरू द्रोणाचार्य ने बसाया था। यहॉ डुंगरात की पहाडी पर कालका माता तथा गणेश जी का प्रसिद्ध मन्दिर है। यहॉ हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते है।